[This question paper contains 4 printed pages.]

1368 *आपका अनुक्रमांक* .....

B.A. (Hons.) बी. ए. (ऑनर्स) / III **D**

HINDI – Paper VIII

हिंदी – प्रश्नपत्र VIII

(हिंदी नाटक)

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 38*

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी *प्रश्नों के उत्तर अनिवार्य हैं।*

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान तमोगुण जी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन है। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं। सुनते हैं कि भारतवर्ष में भेजने को मुझे परम पूज्य मित्र दुर्दैव महाराज ने आज बुलाया है।

P.T.O.

अथवा

जागो जागो रे भाई।
सोअत निसि बैस गंवाई जागो जागो रे भाई।।
निसि की कौन कहै दिन बीत्यो काल राति चलि आई।
देखि परत नहिं हित-अनहित कछु परे बैरि-बस जाई।।
निज उद्धार पंथ नहिं सूझत सीस धुनत पछिताई।
अबहूं चेति, पकरि राखो किन जो कछु बची बड़ाई।।
फिर पछिताए कछु नहिं है है रही जैहौ मुंह बाई।
जागो जागो रे भाई।। (5)

(ख) जिन स्त्रियों को धर्म बन्धन में बांधकर, उनकी सम्मति के बिना आप उनका सब अधिकार छीन लेते हैं, तब क्या धर्म के पास कोई प्रतिकार - - -कोई संरक्षण नहीं रख छोड़ते, जिससे वे स्त्रियाँ अपनी आपत्ति में अवलम्ब मांग सकें ? क्या भविष्य के सहयोग की कोरी कल्पना से उन्हें आप संतुष्ट रहने की आज्ञा देकर विश्राम ले लेते हैं ?

अथवा

मैं केवल यही कहना चाहती हूँ कि पुरूषों ने स्त्रियों को अपनी पशु-सम्पत्ति समझ कर उन पर अत्याचार करने का अभ्यास बना लिया है, वह मेरे साथ नहीं चल सकता। यदि तुम मेरी रक्षा नहीं कर सकते, अपने कुल की मर्यादा, नारी का गौरव नहीं बचा सकते, तो मुझे बेच भी नहीं सकते हो। हाँ, तुम लोगों को आपत्ति से बचाने के लिये मैं स्वयं यहां से चली जाऊंगी। (5)

(ग) अंधेरा उतरने लगा है। एक और दिन डूबने लगा है। माँ भी समझती है कि मैं ही लोगों को परेशान करता फिरता हूं। माँ को मेरी पीठ पर पड़े घाव तो नजर आते हैं, लेकिन मेरा दिल कैसा छलनी हो रहा है, यह कोई नहीं देख पाता। सभी समझते हैं, मैं आवारा हूँ, लोगों से उलझता फिरता हूँ। मेरी यह भटकन कब खत्म होगी, मेरे मालिक ?

अथवा

कोई विश्वास नहीं करेगा। और करना चाहे तो तुम उसे विश्वास न करने दोगे। पर इससे क्या, सत्य को दबाकर उसे मिथ्या नहीं किया जा सकता। बचपन से जब हम लोगों ने एक साथ शिक्षा पाई, तब से आज तक के सारे चित्र मेरी दृष्टि में हरे हैं। पुरोचन को कपट से मारकर तुम पंचाल गए, और वहां द्रुपद को अपनी ओर मिलाया। तभी तो तुम्हारा बल बढ़ता देखकर पिताजी ने तुम्हें आधा राज्य दिया। (5)

2. "'भारत दुर्दशा' के पात्र अमूर्त होते हुए भी मूर्त प्रतीत होते हैं", समीक्षा कीजिए।

अथवा

नवजागरण के संदर्भ में 'भारत दुर्दशा' के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए। (8)

3. 'ध्रुवस्वामिनी' में व्यक्त स्त्री-पुरूष संबंधों की विडंबना का विवेचन कीजिए।

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के पुरूष पात्रों में आप किसे प्रमुख मानते हैं ? उस पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए। (8)

4. 'कबिरा खड़ा बाजार में' नाटक की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'सूखी डाली' में आज की कौटुम्बिक प्रणाली को नए दृष्टिकोण से देखा गया है - इस कथन की समीक्षा कीजिए। (7)